बाबा के ज्ञान में सबसे बडे सात वन्डर्स -

1. हम सब जिवात्मायें हैं. बृकुटि में रहकर हम आत्मायें शरीर की स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों को चलाते हैं. आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रियॉ हैं - मन, बुद्धि और संस्कार. आत्मा का स्वधर्म शांति और पवित्रता हैं. आत्मा के ओरिजिनल सात गुण हैं - ज्ञान, पवित्रता, सुख, शांति, आनंद, प्रेम और शक्ति.

2. हम आत्माये और हमारे परमप्यारे-परमपिता-परमात्मा शिवबाबा, एक उलटे झाड़ के रूप में परमधाम में निवास करते हैं. जिसका बिज शिवबाबा सबसे ऊपर में हैं. हम आत्माओं का रहने का स्थान, परमधाम, सूर्य-चांद-तारा-गण से भी ऊपर हैं. परमधाम वह स्थान है जो समय, संकल्प और साऊन्ड (आवाज) से परे हैं. ये समग्र सृष्टि मुख्य पांच तत्वों, अग्नि, जल, वायु, धरती और आकाश कि बनी हुई हैं. हमारा शरीर भी इस पांच तत्वों से बना हैं. हम आत्मायें चैतन्य हैं. हम आत्माये अति सूक्ष्म ज्योति सितारा है. इसलिए इन आंखों से आत्मा को देख नहीं सकते लेकिन फील कर सकते हैं.

3. हम जिवात्मायें इस सृष्टि रुपी बेहद के चक्र में पार्ट बजा रहे हैं. ये ड्रामा का चक्र पांच हजार वर्ष का हैं, जिसे कल्प भी कहा जाता हैं. उसमें चार मुख्य भाग हैं - सतयुग,त्रेता, द्वापर और कलियुग. हरेक भाग १२५० वर्ष का हैं, जिसे युग कहा जाता हैं. जिवात्मायें इस ड्रामा के चक्र में कम से कम एक जन्म और ज्यादा से ज्यादा ८४ जन्म ले कर अपना पार्ट बजाते हैं. जिवात्मायें आधा कल्प, यानी सतयुग-त्रेता में देही-अभिमानी रहकर पार्ट बजाते हैं जब की बाकी आधा कल्प, द्वापर-कलियुग में देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाते हैं. इसलिए कहा जाता हैं, जिवात्मायें आधा कल्प ज्ञान में (यानी स्व के सत्य स्वरूप आत्मा को जानने वाले) और आधा कल्प भक्ति (यानी आत्मा स्वयं से अज्ञान) में रहकर पार्ट बजाते हैं. हम जिवात्मायें परमधाम से सतयुग में जब पहले अपना पार्ट बजाने

आते हैं, तो सोले कला संपूर्ण सतोप्रधान होते हैं, बाद में घिरे-घिरे जन्म बाय जन्म कला ये कम होती जाति हैं और कलियुग के अन्त में जीरो कला हो जाती हैं. जब सब आत्मायें परमधाम से यहॉ पार्ट बजाने आ जाये बाद में ही सब आत्माये वापस परमधाम जा सकती हैं. ड्रामा के बीच में से कोई भी आत्मा वापस परमधाम जा नहीं सकती.

4. कलियुग के अन्त में और सतयुग के पहले, एक छोटा सा लिप युग हैं जिसे संगमयुग कहा जाता हैं. संगमयुग सो साल का होता हैं. जब की स्वयं परमपिता-परमात्मा (जिसे खुदा या अल्लाह या गोड़ फादर या जहोवा भी कहते हैं) आकर कुछ गिनी चुनी भाग्यशाली आत्माओं को इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं और पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं. अज्ञान मनुष्यों को ज्ञान देने के लिए भगवान साधारण मनुष्य तन का सहारा लेते हैं जिनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं और इनके मुख से जो ज्ञान सुनते हैं वह ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कहलाते हैं. यही ब्राह्मण अपने नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतयुग-त्रेता 21 जन्म देवी-देवता के रूप में अपना-अपना प्रालब्ध भोगते हैं.

5. शिवबाबा ने ज्ञान में बताया हैं की कृष्ण तो सतयुग का प्रिन्स हैं. वही बडा होकर राधा के साथ स्वयंवर के बाद नारायण कहलाता हैं और राधा ही लक्ष्मी बनती हैं. यही कृष्ण की आत्मा कल्प के अन्त में साकार ब्रह्मा का पार्ट बजाती हैं और राधा की आत्मा सरस्वती का पार्ट बजाती हैं. साकार ब्रह्मा संपूर्ण ब्रह्मा बनते हैं और सरस्वती ही सर्व मनोकामना संपूर्ण करने वाली जगतअम्बा बनती हैं. लक्ष्मी-नारायण के संपूर्ण स्वरूप को ही विष्णु या महालक्ष्मी कहा जाता हैं. राम-सिता का पार्ट त्रेता से शुरू होता हैं. शिवबाबा ने ही हमें ज्ञान दिया की इस तरह से मुख्य देवी-देयताओं का पार्ट चलता हैं.

6. ये सृष्टि चक्र के ड्रामा में चार मुख्य धर्म हैं. देवी-देवता धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म और क्रिस्चन धर्म. देवी-देवता धर्म आधा कल्प यानी सतयुग-त्रेता चलता हैं. जब यही देवी-देवताये द्वापर से वाम मार्ग में जाते हैं तो विकारी बन जाते हैं और खुद को देवी-देवता नहीं कहला सकते. इसे देवी-देवता धर्म प्रायलोप हो जाता हैं. द्वापर से पवित्र आत्माये परमधाम से आकर इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म और क्रिस्चन धर्म की नम्बरवार स्थापना करती हैं, जो कलियुग के अन्त तक चलते हैं. अन्त में सर्व धर्मों का विनाश होता हैं और भगवान सर्व आत्माओं को वापस घर ले जाते हैं. वापस इसी धरती पर सतयुग कि स्थापना होती हैं और देवी-देवताओं की आत्माये नम्बरवार पार्ट बजाने नीचे आती हैं. यह सृष्टि का चक्र इस तरह से फिरता ही रहता हैं.

7. सत्य गीता ज्ञान दाता शिवबाबा ने हमें बताया हैं की ये सारा सृष्टि चक्र अकर्म, विकर्म और श्रेष्ठ कर्म के आधार पर चलता हैं. सतयुग-त्रेता में देवी-देवताये आत्मा अभिमानी रहकर अपना पार्ट बजाते हैं, तो वह जो भी कर्म करते हैं उसका कोई खाता नहीं बनता हैं. इसे अकर्म कहा जाता हैं. वास्तव में ये देवी-देवताओं की आत्मायें, अगले कल्प के अन्त में भगवान के कार्य में सहयोगी बनकर अपना प्रालब्ध बनाती हैं जो सतयुग-त्रेता के २० जन्म चलता हैं. द्वापर से रावण राज्य शुरु होता हैं तो जो भी आत्माये पार्ट बजाती हैं वह देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाते हैं. इसके कारण जो भी कर्म करते हैं वह सब विकर्म ही होते हैं, जिसको आत्माये जन्म बाय जन्म भोगती रहती हैं और चुक्तू करती रहती हैं. कल्प के अन्त में बाप आकर हमें श्रेष्ठ कर्म करना सिखाते हैं. एक बाप कि याद में रहकर जो भी अच्छे कर्म (यज्ञ सेवा) करते हैं वही श्रेष्ठ कर्म बनते हैं जो हमारा सतयुग-त्रेता के २० जन्मो का भाग्य बनाता हैं. इस तरह से अकर्म, विकर्म और श्रेष्ठ कर्मों का चक्र भी फिरता रहता हैं.

ॐ शांति.

Pls. provide your feedback on email – a.brahmin.soul@gmail.com